॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

मेधा सूक्त

विषय-सूची

मेधासूक्त 3

मेधासूक्त

[शुक्ल यजुर्वेद, अध्याय ३२ । १३-१६]

शुक्ल यजुर्वेद के ३२वें अध्याय में मेधाप्राप्ति के कुछ मन्त्र हैं, जो बुद्धि दायक होने के कारण 'मेधासूक्त' कहलाते हैं। मेधा शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ही 'मेधावी' कहलाता है। मेधा की वृद्धि के लिए मेधासूक्त का महत्त्व माना गया है। बुद्धि मन्दता दोष के निवारण के लिये भी इन मन्त्रों का पाठ उपयोगी है। मेधा की प्राप्ति के निमित्त इन मन्त्रों में अग्नि, वरुणदेव, प्रजापति, इन्द्र, वायु, धाता आदि से प्रार्थना की गयी है।

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥१॥

प्राप्त करने योग्य, विलक्षण इन्द्रदेव के मित्र, विश्व के स्वामी (परमात्मा) से सेवन के योग्य धन तथा उत्तम बुद्धि की याचना करते हैं। इसके लिए आहुति समर्पित हैं ॥ १ ॥

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥२॥

देवगण तथा पितृगण जिस उत्तम बुद्धि की कामना करते हैं, है अग्निदेव ! उस बुद्धि से आज हमें मेधावी बनाएँ । इसके लिए यह आहुति समर्पित है ॥२॥

मेधां में वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधा धाता ददातु मे स्वाहा ॥३॥

वरुणदेव मुझे तत्त्वज्ञानको समझने में समर्थ मेधा (बुद्धि) प्रदान करें, अग्नि और प्रजापति मुझे मेधा प्रदान करें, इन्द्र और वायु मुझे मेधा प्रदान करें। हे धाता ! आप मुझे मेधा प्रदान करें। आप सब देवताओंके लिये मेरी यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है ॥३॥

इदं में ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥४॥

यह ब्राह्मणजाति और क्षत्रियजाति-दोनों मिलकर मेरी लक्ष्मीका उपभोग करें। देवगण मुझे उत्तम लक्ष्मी प्रदान करें। लक्ष्मीके निमित्त मेरेद्वारा दी गयी यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित हो ॥४॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।